(Sociology) Indian Society & Culture B.A Part II
Paper II

Date
27/7/20

(पुरुषार्थ)
Purusharthā

From –
Ajay Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
(Sasaram)

• हिन्दू विचारधारा के सन्दर्भ में डॉ गोपाल के अनुसार भारतीय संस्कृति यह स्वीकार करती है कि भोगमय जीवन वास्तव में स्वार्थपूर्ण है। इस कारण यह संकीर्ण है। यह उच्चतर आदर्शों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। इसलिए इस संसार और इसके सुखों को सर्वस्व मान लेना उचित नहीं है, क्योंकि सर्वोच्च ऐश्वर्य भी धीरे-धीरे नष्ट होते होते एक दिन बिल्कुल ही मिट जाता है। किन्तु सांसारिक वस्तुओं सुख व सम्बन्धों के नश्वर होते हुए भी उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। चूंकि वे शाश्वत नहीं है, इसलिए उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है – ऐसा विचार करना उचित न होगा। शाश्वत सत्ता सांसारिक पदार्थों के रूप व्यक्त होती है और इसलिए उस शाश्वत सत्ता अथवा परम सत्य तक पहुंचने का मार्ग संसार के ही माध्यम से है।

• वास्तव में दोनों परस्पर सम्बन्धित हैं और उन्हें पृथक् करना अनुचित होगा। इन दोनों को मिलाकर ही मानव-जीवन के वास्तविक स्वरूप महत्व और लक्ष्य का निरूपण और निर्धारण करना चाहिए। इसी महत्वपूर्ण समन्वय की अभिव्यक्ति पुरुषार्थ का सिद्धान्त है।

पुरुषार्थ उस सार्थक जीवन शैली का द्योतक है जो कि व्यक्ति को सांसारिक सुख भोग के बीच अपने धर्म पालन के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति या मोक्ष की राह दिखलाता है। पुरुषार्थ इस लोक को परलोक से मिलाता है – सीमित मानव जीवन को असीम तथा पूर्ण परमात्मा से परिचित करवाता है और मनुष्य की भौतिक बौद्धिक शारीरिक तथा नैतिक उन्नति का पथ प्रशस्त करता है, इस अर्थ में पुरुषार्थ उन मानवीय गुणों का समन्वय है जो कि भौतिक सुख और आध्यात्मिक उन्नति के बीच एक सन्तुलन की सृष्टि करता है।

• अतः स्पष्ट है कि पुरुषार्थ के चार आधार हैं जो कि मानव जीवन के चार प्रमुख उद्देश्यों को भी व्यक्त करते हैं। वे हैं – धर्म – अर्थ – काम – और मोक्ष – मोक्ष मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। पर इस लक्ष्य की प्राप्ति तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि व्यक्ति का मन सांसारिक सुख भोग से सम्पूर्ण भर जाए। चरम तृप्ति के बाद ही विरक्ति (वैराग्य या उदासीनता का जन्म हो सकता है।

Scanned by TapScanner

इस तृप्ति को प्राप्त करने के लिए ही अर्थ तथा काम की आवश्यकता भी जीवन के लिए कम नही है। मनुष्य अर्थ तथा काम मे कही पूर्णतया डूब न जाए इस कारण उसके पथप्रदर्शन के लिए धर्म की आवश्यकता होती है।

• पुरुषार्थ की अवधारणा मे अन्तर्निहित उपरोक्त चारो तत्व को डॉ कपाडिया ने इस प्रकार व्यक्त किया है - मोक्ष मानव जीवन के चरम उद्देश्य एव मानव की आन्तरिक आध्यात्मिक अनुभूति का प्रतीक है" अर्थ मनुष्य मे वस्तुओ को प्राप्त करने व सग्रह उपभोग व अन्य प्रवृत्तियो को बतलाता है। काम मानव के सहज स्वभाव और भावुक जीवन को व्यक्त करता है। तथा उसकी काम भावना और सौन्दर्य की प्रवृत्ति की तुष्टि की ओर संकेत करता है। अर्थ और काम ये दोनो इस संसार मे मनुष्य के सासारिक लगाव, कार्यकलाप एव जीवन की सफलता का प्रतिनिधित्व करते है। धर्म मानव की पाशविक और दैवीय प्रकृति के बीच की शृखला है।

• इस प्रकार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - मनुष्य-जीवन के इन चार उद्देश्यो व आधार से - सम्बन्धित स्वरूप को कहते है। इनमे जीवन के अन्तिम उद्देश्य के रूप मे मोक्ष को मान्यता दी गई है पर जीवन के अन्य वास्तविक पक्षो, अर्थ तथा काम की भी उपेक्षा नही की गई है, और साथ ही उन पर धर्म का नियन्त्रण भी रखा गया है इस रूप मे पुरुषार्थ मानव जीवन के एक सम्पूर्ण व सार्थक स्वरूप का द्योतक है।

=

from -
• Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
Sasaram

Scanned by TapScanner